क्रिया

क्रिया की परिभाषा

किसी कार्य के करने या होने के बोध को क्रिया कहते हैं। क्रिया का अर्थ है – कार्य। कार्य या तो किया जाता है या उसके होने का बोध (ज्ञान) होता है।

परिभाषा :- क्रिया से कार्य के करने या होने का बोध होता है;

जैसे -

(क) रूपा गाड़ी <u>चलाती है।</u>

(ख) राम मशीन <u>चला रहा है।</u>

(ग) गीता गाना <u>गा रही है</u>।

(घ) श्याम खाना <u>खा रहा है</u>।

(ङ) तुम घर <u>जा रहे हो</u>।

उसी तरह क्रिया से किसी कार्य के करने या किसी स्थिति में होने का बोध होता है;

जैसे -

(क) यह रूमाल **है।**

(ख) श्यामा ने खाना **खाया।**

(ग) विनय रोज़ विद्यालय **जाता है।**

इन वाक्यों में -

(क) 'है' रूमाल की स्थिति दर्शाता है।

(ख) 'श्यामा' के खाना खाने का पता चलता है।

(ग) 'रोज़ विद्यालय जाता है' से 'विनय' के विद्यालय जाने का पता चलता है।

धातु :-

क्रिया का निर्माण कुछ मूल शब्दों में विकार होने से होता है, ऐसे शब्दों को धातु कहते हैं।; जैसे - चल, आ, खा, रख, बैठ, दौड़, रूक, कह।

आ - आता, आऊँगा, आईए आदि।

चल – चलना, चला, चलूँगा।

खा – खाना, खाया, खाऊँगा।

कह – कहना, कहा, कहूँगा।

जब क्रिया के धातु रूप में ना लगा दिया जाता है तो क्रिया का रूप सामान्य बन जाता है; जैसे -

धातु		**सामान्य रूप**
पढ़	पढ + ना	पढना
चल	चल + ना	चलना
हँस	हँस + ना	हँसना
कह	कह + ना	कहना
रो	रो + ना	रोना
भाग	भाग + ना	भागना

ये सब आदि क्रियापद हैं।

यदि हम इन क्रिया पदों के ना को हटा दें तो यह क्रिया का धातु रूप बन जाता है।

क्रिया के भेद :-

क्रिया के दो भेद होते हैं - अकर्मक क्रिया व सकर्मक क्रिया।

क्रिया के भेद - अकर्मक क्रिया

अकर्मक - अ + कर्मक = (बिना, रहित) – कर्म से रहित जिन क्रियाओं का फल सीधा कर्ता पर ही पड़े, वे अकर्मक क्रिया कहलाते हैं। ऐसी अकर्मक क्रियाओं को कर्म की आवश्यकता नहीं होती। अकर्मक क्रियाओं के अन्य उदाहरण हैं-

(क) अमन रोता है।

(ख) रेलगाड़ी चलती है।

(ग) साँप रेंगता है।

इन वाक्यों में अमन, रेलगाड़ी व साँप कर्ता है तथा रोता, चलता व रेंगना क्रियाएँ हैं। इनके साथ कर्म नहीं है और न उसकी आवश्यकता है।

अन्य अकर्मक क्रिया -

होना, लजाना, अकड़ना, बढ़ना, सोना, खेलना, डरना, हँसना, उगना, बैठना, जीना, रोना, दौड़ना, चमकना, ठहरना, मरना, डोलना, घटना, मरना, जागना, फाँदना, बरसना, उछलना, कूदना आदि।

क्रिया के भेद - सकर्मक क्रिया

सकर्मक क्रिया – स + कर्मक = कर्म के साथ

जिन क्रियाओं का फल (कर्ता को छोड़कर) कर्म पर पड़ता है, वे सकर्मक क्रिया कहलाते हैं। कर्म के बिना इन क्रियाओं का कोई अस्तित्व नहीं है; जैसे -

(क) सुशीला ने सेब खाया।

(ख) निमेश मिठाई खाता है।

(ग) मिन्टू फल लाती है।

(घ) रीता घर देख रही है।

ऊपर दिए हुए वाक्यों में खाया, खाता, लाती, देखना आदि क्रियाओं को कर्म की आवश्यकती है। इनमें कर्म के बिना क्रिया पूर्ण नहीं है। यदि वाक्य में कर्म की उपस्थिति न भी हो, किंतु क्रिया को उसकी अपेक्षा हो तो वह सकर्मक क्रिया ही होगी;

जैसे - शीला चल रही है, नीमा पढ़ती है।

सकर्मक क्रिया के भेद :-

सकर्मक क्रिया दो प्रकार की होती है -

(क) एककर्मक क्रिया

(ख) द्विकर्मक क्रिया

(क) **एककर्मक क्रिया :-**

जिस सकर्मक क्रिया का एक कर्म होता है, वह सककर्मक क्रिया कहलाती है; जैसे -

बच्चा पानी पीता है। (यहाँ पानी एक कर्म है।)

(ख) **द्विकर्मक क्रिया :-**

जिन सकर्मक क्रियाओं के दो कर्म होते हैं, वे द्विकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं;

जैसे -

(क) निलेश ने **अखिलेश** को **पेन** दिया।

(ख) विनय ने **मीता** को **चिट्टी** लिखी।

(ग) मिन्टू ने **स्मिता** को **कपड़े** दिखाए।

ऊपर दिए वाक्यों में दिया, लिखी, दिखाए क्रियाएँ द्विकर्मक हैं। क्योंकि उनके साथ दो-दो कर्म (अखिलेश और पेन, मीता और पत्र, स्मिता और कपड़े) आए हैं।

काल

क्रिया के काल :-

क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने का पता चलता हो, वह काल कहलाता है; जैसे -

दो दोस्त क्रिकेट मैच देखने नेहरू स्टेडियम गए। भारत और पकिस्तान के बीच मैच का लंचब्रेक हो चला है। दोनों के अनुसार लंच से पहले पकिस्तान ने 295 रन की पारी खेली थी। अब लंचब्रेक के बाद भारत को 296 का लक्ष्य प्राप्त करना होगा नहीं तो मैच पकिस्तान जीत जाएगा।

'पकिस्तान ने 295 रन की पारी खेली थी' यह एक कार्य के समाप्त होने की तरफ इशारा कर रहा है। 'लंचब्रेक हो गया है' यह एक कार्य के होने की तरफ इशारा कर रहा है और 'अभी भारत को 296 का लक्ष्य प्राप्त करना होगा' एक कार्य होगा, उस तरफ संकेत कर रहा है। यहाँ हमनें क्रिया के तीन रूपों को होते हुए दर्शाया है। इसका तात्पर्य है कि काल के अनुसार (समय के अनुसार) क्रिया भी बदलती रहती है।

इसलिए हम कह सकते हैं कि क्रिया के होने के समय को ही हम काल कहते हैं। जैसे-जैसे समय (काल) बदलता जाता है, क्रिया में भी बदलाव आता जाता है।

उदाहरण के लिए -

हम पिछले हफ्ते स्कूल गए थे।

हम आज से स्कूल जाएँगे।

और हमारी परीक्षा अगले सोमवार से शुरू हो रही है।

इसी आधार पर काल के तीन भेद माने जाते हैं -

(क) भूतकाल

(ख) वर्तमानकाल

(ग) भविष्यकाल

(क) भूतकाल :-

क्रिया के जिस रूप से हमें बीते हुए समय में कार्य के खत्म होने का ज्ञान हो, वह भूतकाल कहलाता है; जैसे -

1. ओम शन्ति ओम, 2009 में आई थी।

2. मैच में शाहरूख खान की टीम हार गई थी।

(ख) वर्तमान काल :-

क्रिया के जिस रूप में कार्य का वर्तमान काल में होना पाया जाए, उसे वर्तमान काल कहते हैं; जैसे -

1. मैं क्रिकेट खेल रहा हूँ।

2. तुम अभी चाऊमीन खा लो।

(ग) भाविष्य काल :-

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य भविष्य में होगा, वह भविष्य काल कहलाता है; जैसे -

1. हम सब अगले महीने शिमला जाएँगे।

2. तुम कल मेरे साथ मूवी देखोगी।